

DPN 6954

योगिनी दशाफल YOGINI DAŚĀ PHALA

Title :

Run. No. 7679

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Astrology.*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : *Skt.* / New. / Nep. / *Skt.*- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 13.0 x 1.835

Folios

/

Lines (in a page) 176

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : *✓* New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / *✓* paper / thyasaphu /

Condition : *✓* fine / damaged by worms, rats, water /

✓ Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. अथ योगिनी दशाफल ॥

वैशिरां च विषदां विनाश वाहनादि वसु रत्न लाभ सदा ॥ P.T.O.

कामिनी सूत गृहादि लाभ सदा मंगला स्वप्न मंगलोदया ॥

अन्तरदशा ॥

वयं यद्युष्मं ॥ गन्तव्यं तदुक्तं ॥ इत्युक्तं ॥
 माता सदा रेवदविहि विरयारु सार्थं ॥
 जून्मयमरुतां संगता ॥ इवास्वनाधं सुखं
 गमन्मासानां नमस्तस्य कोटिभूतः ॥ अथ
 द्विदन्तकलत्रं च संगला संगलमथ
 गमन्मा ॥ १ ॥ पिं ॥ पुनपानं ॥ वेदनीतवति
 पुनिस्यादिना राजमाचलमगाधनपाणि
 नशवराधं सुखं गुरयदा संगलामधगम
 पिंगलादि ॥ २ ॥ धं ॥ चापानगवदु सुखं धनं
 द्विगन्तमिगदिव धनं धन्यगृहादिसारः ॥
 अ. पु. राजय कनं स्वजनपुनिस्या. धन्याय
 तवगि संगलापाकमथ ॥ ३ ॥ अ. ॥ मनीत्रने
 मयकृष्णग. यामाविकानठसुहजापथ ॥
 तर्धदुपीजानुशीविधाग. अनामनी संग
 ले गमिनीत्या ॥ ४ ॥ अ. ॥ मनीत्रमोस्यं अ
 मोचनं च धनागेमः कीर्तिविमषवृद्धिः
 दन्तद्विकापाने पमाननं च तडादममंग
 लमथगमथ ॥ ५ ॥ उ. ॥ विरु उमं उमसग
 यधिधोनकवृ. अ. अयं स्वजनवर्षवि
 वादमृगं ॥ तामादिपु. कलहानिलदह
 पीजउ. अयदातवगि संगलापाकमथ
 ॥ ६ ॥ सि. ॥ चापालसिद्धि धनं धन्यलासा
 नार्थलाभयुवगिविलासः ॥ संगान सारव्यं
 हानिप्रउद. सिद्धि का संगलापाकमथ ॥
 ॥ सं. ॥ धनद्विः किल वीनजनादुववत्रय
 नउमिप्रपत्रिपीजना. सुगकलत्रविधागस
 रं तथेयदिव संगलापाकमथ ॥ ७ ॥
 मया संखितं संगलामथगाना. सुलं सुवम
 मथम. कानरुणं ॥ अथवशादु पिंगलापा
 कगमना. सुखेठविहि. सदाविननीयं ॥
 ॥ अथपिगलादमरु. सं. ॥
 मनीत्रमुखं चाधि वपय नार्ध धने बाहने

मया लखितं संगतामं ध्यानां रुतं सर्वं मे
 गन्धमं कानरुतां अथव शाहं पिंगलापा
 कगनारुतं खेठविहः सदा विननीयां
 ता ॥ अथ पिंगलापाकमं रुतं ॥ ॥
 अनीत्रमुखं बाधिवपय नार्ध धने बाहुने
 वेरववृद्धिनावा गृहं स्वल्पवातः पुवाताः
 तिलाषं यदपि गलापि जलापाकमं ॥ १ ॥
 धीमं शार्चिमर्दने कनीयं मद्रकं कनीयं
 ॥ ४ ॥ पुतादरं लयाधनं न्यादा ॥ पुताद
 फिकं जीनिउं गुरुसुरवातं न्यादा ॥ घन्याद
 मरुवति च न्ननापिंगलायां ॥ २ ॥ ॥ मका
 दयं विकलता विविधा किकं जी दमनं नरु
 लवियाग कनीयं मर्दिता रुनि जुमः सुतक
 लं उरुने वियोगं ॥ ३ ॥ मना रुवति पिंगलापा
 कं मध्यं ॥ ४ ॥ ॥ मिता निमोसं मनिधो किता
 रुं दास्य ताया सुतादि सुखदाधनं न्यादा
 जी ॥ ५ ॥ दमधिकान पदवी न नूय चूणीयं चं कुचि
 कारुवति पिंगलापाकमं ॥ ६ ॥ ॥ सदा वि
 यहावादः युद्धमति श्रुति स्युद्धया लाघरध
 रुत्यनं ॥ ७ ॥ धनार्किं वक्तुादिकानां वियोगं
 पदासा लयापिंगलापाकमं ॥ ८ ॥ ॥ ति ॥
 सोताग्यति द्विज्या त्रिपूनां दवाचनं वायक
 पूजनं वा मितादि होरां विजयं त्रिपूना सिद्धि
 मपिंगलापाकमं ॥ ९ ॥ ॥ सांशो नाहं नं नम
 पुफडः खं हानि रयं पूजकलुग रुदं ॥ १० ॥
 दयं सन्निहमी नपी जगमोपा संकटापिंग
 लापाकमं ॥ ११ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न्यपूजाफि होरां ननपमि कुलमानां सर्वदा
 धर्मवृद्धिं ॥ १२ ॥ ॥ रुवति मनुनं गमपुष्टमास्था रुनी
 नरुकेल सुखसुमृद्धिं मद्रुलापि सुलायां ॥ १३ ॥
 मया लखितं पिंगलापाकमनां रुतं सर्वं मे
 गन्धमं कानरुतां अथव शाहं धकापाकगं

0
5
10
15
20
25
30

ctms.

प्रहकलसुरसमृद्धिभक्तलापिस्तलाया
मयासखिमं पिंगलापाकमानां रुतसर्वमन
विसृज्यतुलगां अथवाव्यादुधकापाकग
नां रुतं खठविलिः सुदाचिकनीयां ता
॥ अथ धर्म्या न कत्रयमस्तु ॥
मधवमानमहिमासमगास्वकीयविद्याम
निधनकलसुखानिगद्यन्मर्जोर्जयोएव
मित्रागमरुत्सुखं हि धन्यायदातवमिम
ध्वगमास्वपाके ॥ गाथा ॥ अलसमिमिग
डावमयूकं मनीषममनकृतदिज्ञानाच
षष्टिगुह्यं ॥ उग्रकजनविवादमानस
मानहृदयदिहवमिचधन्यामध्यागुमना
चगा ॥ ३ ॥ अत्र न विमलकीर्तिव्यवृद्धि
ननेषास्वजनसुगकलणः सदासोख्यम
गुकठिनोपविनागगुफसोखीदिवीर्द्धि
यादहवमिचधन्यामध्यागुहिकाचगा ॥
॥ ३ ॥ अथ कलहविपक्षिर्वादेव कलानोच
मिपुविविधविकारविगुहावधुतिश्च ॥
नृपनिमिचनपीठस्रस्रश्चयदिहवमिच
धन्यामध्यागुहकाचगा ॥ ४ ॥ ति ॥ न
मिमानविनाजिगविगुहं रुगनिपुंशुत्रग
थयुगंसदा ॥ सुमकलसुखं ननु सिद्धि
कापकृत्रुणं यदि धन्यादमगता ॥ ५ ॥ सु ॥ क
लसुखकष्टकमलावियागं मरुपकोपं चोद
शीतिवागादिनागं वृक्षकलचनमाधिपा
धन्यादमासंकटाच ॥ ६ ॥ मे ॥ हृपाऊं यं
मिविकानविविधुर्वागं योऽपुनापनिहना
मिगमं संपूय ॥ ७ ॥ सु ॥ लारायुगमनुनी
यिसारमकुपिपायदिचधन्यादमं मंगला
पपं ॥ ८ ॥ पि ॥ सदा मरुनामः सुखमनु
पमिहामहाडवालाविवाद्यजरा ॥ स्वदा

सत्रागपीडितं याजुर्वारु नविनामद्वयवर्ग
 वक्रिबोत्रनृपमरुपीडितं सपुकारवागवो
 कायाश्रिणा ॥ शांतिं ॥ सुधमुकार्येषु सुयामा
 श्रुवावृत्तिदिजदेवहको ॥ अथयमर्थवि
 दुगासमनस्यसिद्धिकारुडिकापाकमध्या
 ॥ सी ॥ केनवमनावकारं गुफइरवावपमि मसि
 लर्याविषादे र्वायूच्चविनामः ॥ निजकृतपत्रि
 कुमंकेमपीठावक्ष्यं यदि र्वमिचरुडामय
 गसंकटावशा ॥ ५ ॥ म ॥ धन्यावराशिनिजवर्ग
 लर्यानिक्कृतीलाविलासधृदनां वसिष्ठा ॥
 लोकषुचवकूत्रनवमस्यत्यतिष्ठातडादभाग
 नवनीकिलमङ्गलावा ॥ ५ ॥ पिं ॥ सुरुदनंनघ
 नंकलिनामविसलवृद्धिविलाससुर्यानिवा
 अमलकीर्तिगङ्गाकिलपिङ्गलासुनसुरवंक
 नृमवृद्धमयदा ॥ ५ ॥ ध ॥ कलसोरयंमहि
 षासुधनूर्धवागमंमज्जयंविवाद ॥ नृपे
 नुमान्यंकूत्रवर्धनातडादभयांपदित
 त्यविष्टना ॥ ५ ॥ कलउपूजदिवियागड
 रंमहद्वयंरूपकृतंवेइ ॥ रं ॥ विदासत्रा
 गंवनत्रीत्रकहंवेडामत्रीरुडिकपाकमः
 एणा ॥ ५ ॥ मयालेखितंरुडिकापाकमनांरु
 लेसेधमगर्भमंस्काररुगा ॥ अथवव्याह
 वाककापाकमनांरुतंरवठविरुः सुदावि
 ननीयां ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

0 ctm.

5

10

15

20

25

30

धृष्टकादमरुतं॥
 दहपीजजायतनातपिते नारुहानिव
 वनंनरुहीनिमांलीप्रजादः स्याद्विद्युत्तम
 विपत्तिरक्षकापाकंने हवइत्ति काचि॥
 ना॥ कयंदि कुराहविता र सुवधमरु यः
 ननु ने कस्यत्त र हन था प्र न नायना
 उमा बलमशु र वइत्ति कापाक गम सिद्धि
 काचि॥ २॥ सं॥ शिब कर्क नासादिक कश्चि
 कात्रा र वइ रुक वृ नृपात्रौ नौ पि॥ तयं
 वधनं दशपी अविरागं र वइत्ति दम
 रक्षमा संकटावे द्वा॥ सं॥ त्रामदि नाभः
 त्रिपू कृष्टं नाभे लाशु र वइ मागं सका
 म॥ ५॥ पोत्राज नासु स्य स ह य काः स्य
 मज्ज लावोत्क टपाकाम स्यात्ता गापि त्व
 मास नादा सवि नाद सोरगं वक्रुदिलारं ध
 नक्षत्रा सोरगं॥ पृथ्वीमणिः स्याद्विज दं व नार्थ
 वइत्ति कापाक गमपिंगला स्यात्ता धा॥ धी॥ सुखा
 दयं मित्र सप्तगम च त्रिपू कृष्टं दम न नाधिः
 पयं॥ वक्रुप नाध न व सर्व मे शी व इत्ति का
 पाक गम धं न्य का स्यात्ता॥ ४॥ ॥ दम नो ग
 याधि इः रवा वशां वं धू द गं वृद्धि नागं ध ना
 र्क॥ ते जो उ सं वाग्नि रीत्रादि हीनि मू कापा
 क जाय तं शा मरी वे द्वा॥ ३॥ ॥ सुवध नो य
 दि कला र मयं वा नि सु ना नि वध नाग म
 स्यात्ता र वृष्टा दा पा फि त्र हो ल्क ण यां व रु दि
 स मी य र द सा ल दि॥ २॥ पया श मि र्म जा

0 c t m s .
5
10
15
20
25
30

इति ज्ञातुं स वाग्नि वीर्यादि होमि मूलापा
क जायते शुभमपी वेत्ति ॥ ३ ॥ सुवर्ग नोप
दिक सार मयं वानि शुभाति वधनागम
त्याशां च दुष्यदापाफि त्रहोस्तु दयां च रुद्धि
मासीय गृह सुलक्षि ॥ ४ ॥ मया सुखि मन्वा
स्तु दया कगनां रुतं सर्व भगवन्मला न
हर्गं ॥ अथाव आहं सिद्धि कापा कगनां रु
तं स्वठ विद्धिः सदा विन नीयां ॥ ५ ॥ इति
अथ सहाय मरुतं ॥
रदुष्यागमं मम सिद्धि विनि न कार्य सिद्धि
महि विवाह सुख मधु नितिः स्वना च ॥ ना
मास्तनादि सुख मगुरु वेद्धि तत्वं वेत्ति सिद्धि
कार वल सिद्धि कपागम स्यात् ॥ ६ ॥ सं ॥ अ
ल स्यात् वाक्ये मु च पीजा याता विकाना
दत्र वा न यगनां नारु शीति कुल वीक्षया
मं सिद्धाद मया यदि संकटा स्यात् ॥ ७ ॥ मं
मूलाप केल मंति विदु मसार कात्री नाना
चन स्य निदयं कुरुत विभु तं यदि सांग
ना वदन पंकज मद्य दत्वं वम मला एव
ति सिद्धि कपा क मध्वा ॥ ८ ॥ पिं ॥ अर्द्ध क
पा लक्षि सित्रं मत्री ग्रहे मादि व मु यतिः
हाव नै वा कामाधिकं काम नि संगमं च
सिद्धाद मया यदि पिंगला स्यात् ॥ ९ ॥ धी ॥
गृह द्वात्रि वाजी नर सत्रं गवाजी विविधां क्वा
सा सु दे म स्य लात् ॥ ब्रह्म वासिका मिश्र प
तादि ला ली यदि सिद्धि काम मध्वा मध्वा का
स्यात् ॥ १० ॥ अनाप दं च सु ज नादि कष्टं
पूजा फ मि उ न्न व वेद्धि नो धा नृपादि लीनि
कल हं च रागं च शुभ मनी सिद्धि कपां कगम
मागम ॥ ११ ॥ सकल माप हति भ्रम लो द

नादि साहाय्यसिद्धि का मध्यम मध्यम
 स्यात् ॥ १ ॥ ॥ जनापदं वस्तु जनादि कष्टं
 पूजक मित्रं वस्तु वद्विनाथा ॥ नृपादि शीनि
 कलहं च रागं वैकुण्ठमनीसिद्धि कर्पाकग
 त्यागा ॥ २ ॥ ॥ सकलनापहृति वस्तु लोद
 यं विमल कीर्ति गद्यं विपुलं धनं ॥ विपुल
 ह सुखं नृपसा नाना वृद्ध दत्त त्वरु सुस
 पागना ॥ ३ ॥ ॥ सुरादि नागं नृप मडः
 खं नृपादि शीनि कलहं क्रमिणा मनादि मो
 हं उमना विमलं वैकुण्ठमनीसिद्धि कर्पाक
 मस्यागा ॥ ४ ॥ ॥ मया लेखित सिद्धि पाकगना
 रुलं सर्वमेव मलाकारहृणं ॥ अथ वच
 हं तु कलपाकगना रुलं वद्विनाथा ॥ सदा
 विनं नीयां ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जयसंकटयादभारु लं ॥
 दहादिकष्टं मरुतानडुलं ॥ रागाधिकार
 नकष्टं पुपिलं ॥ विदोष रागां विपुलीति
 संकटा संकट मध्यम स्यात् ॥ १ ॥ ॥ मया
 सुसुमादि गुणना धन धन वद्विः प्रस
 तत्प्रवृत्त हो हृदय मेत्र वादिः ॥ सुखानप
 विग कल सख न मतिः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कल मतिनी ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वस्तु लोद कयानकासु वं जनपुमिणी ॥ न
 यम्व सारं खलु सव कानां वैलिङ्ग सारं क
 वपाक मस्यागा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नृदि जानां दाने मति स्त्री यजि पादि हो मं ॥
 वद्वि मस्या वन लोद नृप वं संकटया
 रुवादि हृदं म्या ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 मल के पुना चादि जी ज वन लोद नृप ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नादि रागां विपुलीति ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

0 Cms.
 5
 10
 15
 20
 25
 30

0 c fms . 5 10 15 20 25 30

नृपतिनाममहाप्रसादात्तु
 बद्धयमात्स्यावनलद्विप्रवत्सुकठया
 रुवागिहृषन्या॥पा॥॥यन्मननंपर्वगत
 नलकेषुनामनिमीजयनलनिनय
 गादिनागंनिपूहीतिइत्येवदामनीनाइद
 म्मपुपना॥॥॥॥अननूकीरिवसाविः
 कवर्धनंनिपूगशस्यवमंरुमिगंइवास्त
 कलनापहृगिभ्यस्तुखादरायदिप्रसंक
 पाकगंरुडिका॥॥॥॥महाभोगिणीः
 जवनागुकिंकर्षुसथापांदमूलकडी
 शुक्कादीनाधनलानिकृद्वानमागकडी
 त्वत्संकडापाकगंवीकटावेदू॥॥॥॥सि
 पातवन्महाजानृपकाभ्यंकलीवालीवि
 र्ममासुकलासुदरुः॥अनकमिप्रपि
 यदर्शनवत्॥सिद्धान्तसंकडापाकगंरु
 का॥॥॥॥मयासुखितासंकडापाकगंरु
 त्सर्वमेगंमकात्रहृगो॥अथारवन्मा
 मिकुकाभ्यमकेसदागविवायुसुभा
 सुहृदः॥॥॥॥अननूकीरिवसाविः॥॥॥॥

रजागरममयममः॥॥॥॥नृकिफाहानि
 मायेसविमोर्हिमरेगंरुडवन्मनय्या
 लोभमन्त्राननासंरुयं॥॥॥॥अननूकीरिवसाविः
 सुकलिवी॥जीवपीस्त्रमविरुच्युक्तिर्कति
 नृमेतामायकृद्वमुदागीस्तनउरुमर्कपू
 र्ववधविप्रदहनेकीधवार्यविद्यागीः॥॥॥॥
 अर्थर्कनागइत्येवमहंकिनूयैविघ्नम
 नार्थनारुहाहानिकोमरुकिशाभाननप्रिप
 नृपनैर्विहासाधनाफिः॥जीवमानार्थ
 सातातवनिस्तुसुनसर्वनासोगताधिर्क

अथ चक्रांगः ॥ १ ॥ चक्रांगः ॥ १ ॥ चक्रांगः ॥ १ ॥
 नार्थनारुणाङ्गानिहोमराग्यागोन्नत्रिपु
 नृपनैर्द्विविहासाधनाफिः ॥ १ ॥ जीवमानार्थः
 साहोतवनिहोसुनसर्वनाहोगताधिर्भ
 न्देनैवार्थसोरोकाविगनमदवसाइइति
 होमलीनः ॥ २ ॥ राहनायै ॥ ३ ॥ यविज
 यसुरवसुहस्तुसुखाभाफत्रियो ॥ ४ ॥ नजा
 योफिलीहीजेपुनरुवकिनो ॥ ५ ॥ तद्वमिजार्व
 खवी ॥ ६ ॥ जीविसुहस्तुमिचूति ॥ ७ ॥ नपत्रेगुनो
 हुरियेदिमत्तः ॥ ८ ॥ सोरांकिं सनाष्टंगज
 लियमहिमंरुतिमाधोमिसंन्यो ॥ ९ ॥ रा ॥ रा ॥ रा ॥
 इः खवउर्थसुविमर्ति ॥ १० ॥ मणिनिजसुहस्त
 मयत्तैवउत्तसुहस्तुमिचूति ॥ ११ ॥ नजहृग
 द ॥ १२ ॥ ज ॥ १३ ॥ सोरां ॥ १४ ॥ म ॥ १५ ॥ पी ॥ १६ ॥ च ॥ १७ ॥ वा ॥ १८ ॥
 रुवागिसुनगुनो ॥ १९ ॥ गोर्गवमाकिसातो ॥ २० ॥ लीवव
 पोर्कपूउयुवनिधनसुहस्तुमिचूति ॥ २१ ॥ योरागद
 ॥ २२ ॥ पा ॥ २३ ॥ र ॥ २४ ॥ की ॥ २५ ॥ रा ॥ २६ ॥ स ॥ २७ ॥ ज ॥ २८ ॥ म ॥ २९ ॥ उ ॥ ३० ॥
 गोवाधिदोतांगसमकोलोमवृहपुत्रमिचूति
 रुवत्तयममिज ॥ ३१ ॥ लीसुनाष्टः ॥ ३२ ॥ कलिः ॥ ३३ ॥ स्यान् ॥ ३४ ॥ उ
 र्वपूजयत्तालीसुनगुनो ॥ ३५ ॥ नरुन ॥ ३६ ॥ उहि ॥ ३७ ॥ र ॥ ३८ ॥
 निजार्ग ॥ ३९ ॥ गोवा ॥ ४० ॥ स्यान्निवित्तदं ॥ ४१ ॥ घनतुनविनहं
 सूर्यपूजाददमि ॥ ४२ ॥ रा ॥ ४३ ॥ सूर्य ॥ ४४ ॥ पु ॥ ४५ ॥ रा ॥ ४६ ॥
 किनगदम ॥ ४७ ॥ ना ॥ ४८ ॥ न ॥ ४९ ॥ गो ॥ ५० ॥ र ॥ ५१ ॥ व ॥ ५२ ॥ सो ॥ ५३ ॥ र ॥ ५४ ॥ यौ ॥ ५५ ॥ व ॥ ५६ ॥ क ॥ ५७ ॥
 शनिनागम ॥ ५८ ॥ म ॥ ५९ ॥ य ॥ ६० ॥ वा ॥ ६१ ॥ व ॥ ६२ ॥ ज ॥ ६३ ॥ स ॥ ६४ ॥ न ॥ ६५ ॥ सो ॥ ६६ ॥ रा ॥ ६७ ॥ म ॥ ६८ ॥
 प ॥ ६९ ॥ रा ॥ ७० ॥ इ ॥ ७१ ॥ र ॥ ७२ ॥ व ॥ ७३ ॥ डी ॥ ७४ ॥ व ॥ ७५ ॥ नि ॥ ७६ ॥ व ॥ ७७ ॥ दि ॥ ७८ ॥ र ॥ ७९ ॥ व ॥ ८० ॥
 गो ॥ ८१ ॥ द ॥ ८२ ॥ य ॥ ८३ ॥ वा ॥ ८४ ॥ व ॥ ८५ ॥ उ ॥ ८६ ॥ डी ॥ ८७ ॥ उ ॥ ८८ ॥ दि ॥ ८९ ॥ य ॥ ९० ॥ म ॥ ९१ ॥ ना ॥ ९२ ॥ ल ॥ ९३ ॥ नि ॥ ९४ ॥ र ॥ ९५ ॥

युवतिस्तत्रैवं कुरुतां नानाकृत्यसूना
भक्त्या त्वत्प्रेममिव लोको विलिखन्
हृदये मलयप्रपञ्चकम् तव प्रविष्टम् कीर्ति
विद्यार्थनारुणः ॥ १० ॥ अथ ईश्वरमात्मनि वि
स्त्वङ्मुखा निष्ठाया मया ह्येतत् ॥ त्रैलोक्ये
स्थितौ ईशाया धनसुकसावति निष्ठो
त्तुलिता ये ॥ सोदात्मनश्च ननु त्वत्प्रे
मे मे नास्तीत्युपावदात् ॥ नन्दराजं पु
राम विविधधनसयं तु द्रुता ॥ ११ ॥
॥ ११ ॥ सुखं वन्दे भक्तिमते ईश्वरे मे स
र्वदा स्थायी दयालुः स्वामी नमस्कृत्य

This image shows a single, severely damaged page from an old document. The paper is a mottled brown color, indicating significant age and water damage. There are numerous tears, especially along the right edge, and a large horizontal crease across the middle. Faint, dark markings are scattered across the surface, but they are mostly illegible due to the staining and physical damage. Some of the visible markings appear to be remnants of text or simple sketches, but they cannot be accurately transcribed.